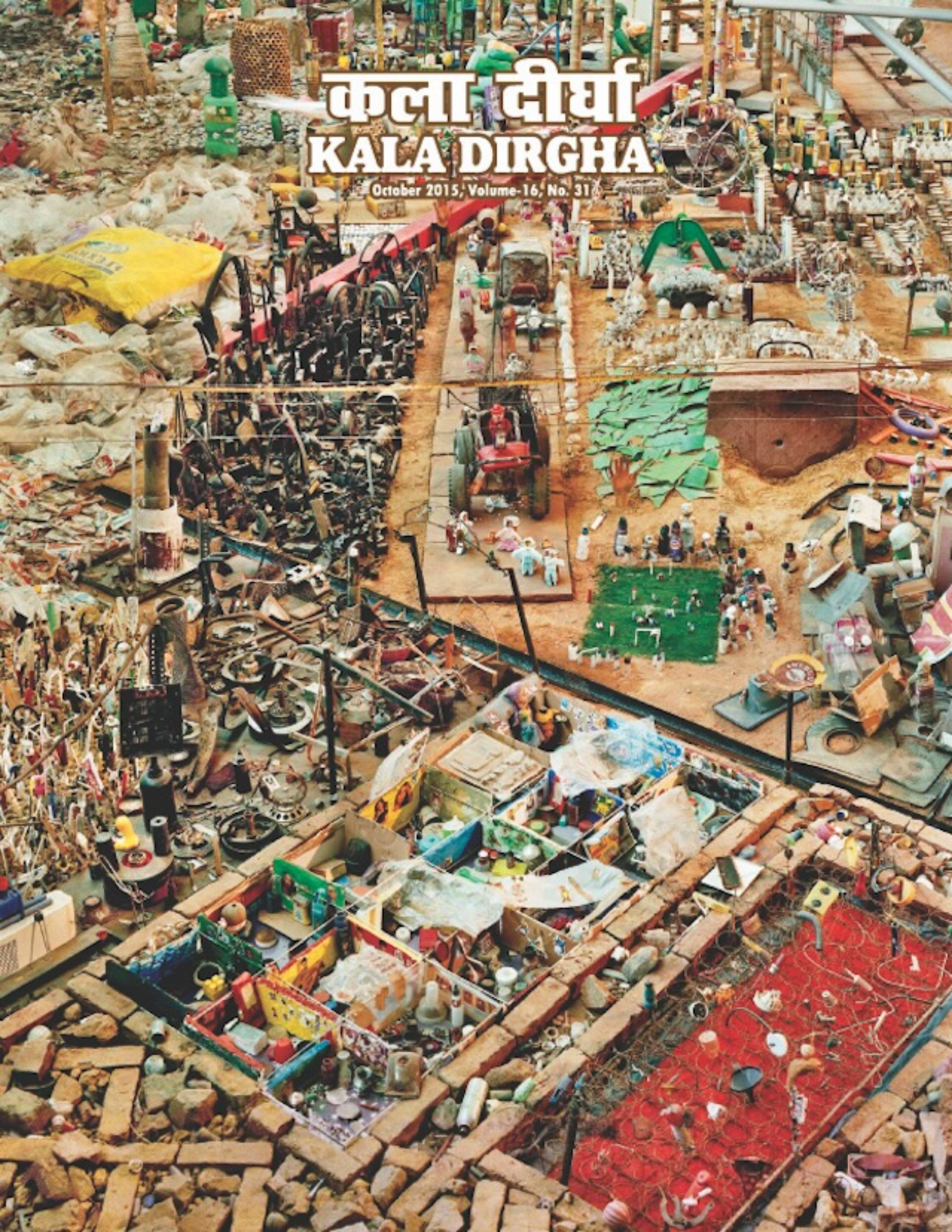

# कला दीर्घा
# KALA DIRGHA

October 2015, Volume-16, No. 31

# कला दीर्घा
# KALA DIRGHA

दृश्य कला की अंतरदेशीय पत्रिका, अक्टूबर 2015, वर्ष 16, अंक 31
International Journal of Visual Art, October 2015, Vol. 16, No. 31
Website : www.kaladirgha.com
ISSN : 0976 - 1500

के.जी. सुब्रमण्यन की कलाकृति Painting of K.G. Subramanyan

आवरण : विवान सुंदरम Cover : Vivan Sundaram

*Publisher & Distributor*
**Anju Sinha**
1/95, Vineet Khand, Gomti Nagar, Lucknow-206010 INDIA
✆ +91-522-2725942 Email : anju1965@yahoo.com
website : www.kaladirgha.com

*Editor (Honorary)*
**Dr. Awadhesh Misra**
C-361, Rajajipuram, Lucknow-226 017, INDIA
✆ +91-94150 22724 Email : misra.awadhesh@gmail.com
website : www.awadhesharts.com

Co-Editor
**Dr. Leena Misra**

Representative - Delhi
**Hemraj**

Representative - U.K.
**Rakesh Mathur**

Representative - U.S.
**Smita Narayan**

Representative - Korea
**Song, In-Sang**

The editor is not responsible for the published articles. For any legal dispute the matter will be in the jurisdiction of the Lucknow Courts. Reproduction in any form is prohibited.
Printed at Archana Advertising Pvt. Ltd., New Delhi

Price : ₹ **150/-, US $ 10; UK £ 6,** for institutions- ₹**250/-** in India

# कला दीर्घा
# KALA DIRGHA

दृश्य कला की अंतरदेशीय पत्रिका, अक्टूबर 2015, वर्ष 16 अंक 31
International Journal of Visual Art, October 2015, Vol. 16, No. 31
website : www.kaladirgha.com

प्रभु जोशी

06 कला का समकालीन परिदृश्य

मनमोहन सरल

37 अमूर्त शैली का अप्रतिम चित्रकार

Ipshita Sahu

60 The Artist with a Modern Sensibility

वेद प्रकाश भारद्वाज

12 कला देखना ही नहीं विचार करना भी

डॉ. लीना मिश्र

41 कला का काव्य : वॉश चित्रकला पद्धति

Balamani M

65 Telangana Stupam . . .

भुनेश्वर भास्कर

18 सामाजिक सरोकारों के सर्जक

डॉ. राजेश कुमार व्यास

43 कलाओं के सौंदर्य की शब्द सर्जना

Dr. Ashrafi S Bhagat

71 Concealed Visibility

डॉ. राजेश कुमार व्यास

24 रंग-रेखाओं की लय में उभरता उजास

Poonam Baid

48 The Journey of Printmaking in India

R.Shiv Kumar

76 Painting a Picture of the World

निशान्त

29 कला में भारतीयता की खोज . . .

Abhilasha Ojha

54 The abode of Art Culture And Tagore : Santiniketan

Suneet Chopra

81 Exploration

# एक सम्वाद

यह सर्वमान्य है कि कला (दृश्य भाषा) सबसे प्राचीन भाषा है और मानव जीवन में संप्रेषण की सबसे पहली भाषा यही बनी होगी। अनेक कलाकारों ने अपने अपने साधना के जरिये इसे अकल्पनीय ऊँचाईयों तक पहुँचाया भी है। कारखानों और चित्रशालाओं में कला के अनौपचारिक प्रशिक्षण तदुपरान्त स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों में कला का औपचारिक प्रशिक्षण, भी आरम्भ हुआ। कभी देशी पद्धति और कभी विदेशी पद्धति से बोझिल हुये पाठ्यक्रमों से कला विद्यार्थी कितना सहज हो पा रहे हैं और उनका भविष्य क्या होगा इस बारे में विचार करना भी आवश्यक हो गया है। कहीं-कहीं ये लगता है कि कला विद्यार्थियों को जो विश्वविद्यालयों में परोसा जा रहा है, व्यावहारिक जीवन मे उसकी आवश्यकता नहीं है और जिसकी आवश्यकता है उससे वे अनभिज्ञ हैं। अभी जबकि समस्त कलाओं मे सहकार और सहचार होना चाहिए तो हम अत्यन्त केन्द्रित होकर विशेषीकरण की ओर बढ़ रहे हैं। पाठ्यक्रमों की ओर तो एक बार गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है ही कला गुरूओं के चयन में भी सरकार को पुर्नविचार करना चाहिए। अनौपचारिक कला शिक्षा में तो विद्यार्थी को पूरी छूट है कि वह चाहे तो अपना मन पसंद गुरू चुन ले पर कला संस्थाओं मे यह सुविधा नहीं है। आज भी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग प्रायोगिक विषय पढ़ाने वाले कला गुरू की पात्रता के लिए लिखित परीक्षायें लेता हैं। इससे बड़ी विडम्बना क्या होगी।

अवधेश मिश्र, संयोजन 2/2015, कैनवस पर एक्रेलिक, 90 x 90 से.मी.
Awadhesh Misra, Composition-02,2015, Acrylic on Canvas, 90 x 90 Cms.

इन गुरूओं द्वारा तैयार की गयी कलाकारों की खेप आज कला की मूल प्रवृत्तियों और शिल्प से अनभिज्ञ हो रातों रात कला जगत में स्थापित होने की होड़ में लगी रहती है। वे कला के मूल तत्त्वों से विरत हो कुछ ऐसी बाजीगरी करना चाहते हैं जिससे मीडिया आकर्षित हो और वे दिन दुगनी रात चौगुनी, पैसों के ढेर पर बैठ जायें। इसके लिये कला गुरूओं, कला बाजार और इसके बाद किसी की भूमिका पर पुर्नविचार करने की आवश्यकता है तो वह है मीडिया। आखिर मीडिया और कला समीक्षक ही तो गंभीर और अगंभीर कला का भेद बतायेगें वही तो हमें देखना सिखायेंगें। वहीं तो हममे सौन्दर्य बोध विकसित करेंगे और जब समाज का इतना बड़ा जिम्मेदार वर्ग अपनी जिम्मेदारी भूलकर अनेक कारणों से सतही कला को अति गंभीर तरीके से समाज में प्रस्तुत करेगा तो कला के भविष्य का अनुमान सहज की लगाया जा सकता है। इस तरह से कला का एक नुकसान तो यह होगा कि समाज का एक बड़ा वर्ग उसी को कला मान लेगा जो कला के मूल तत्त्वों से हीन एक सतही कृति है। दूसरे वही कृति और कलाकार युवा कलाकारों का रोल मॉडल बनेगा और युवा कलाकार भ्रमित हो अपनी कला साधना से विमुख